पवित्रता मास

मन मेरा सुमन – 1

01.09.2017

1. **स्वमान** – मैं शुभसंकल्पधारी पवित्र आत्मा हूँ।

- पवित्रता ब्राह्मण जीवन का वरदान है। पवित्रता ब्राह्मण जीवन के विशेष जन्म की विशेषता है। पवित्र संकल्प ब्राह्मणों की बुद्धि का भोजन है। पवित्र दृष्टि ब्राह्मणों के आंख की रोशनी है। पवित्र कर्म ब्राह्मण जीवन का विशेष धन्धा है। पवित्र संबंध और संपर्क ब्राह्मण जीवन की मर्यादा है। पवित्रता के आधार से ही ब्रह्मा बाबा `आदि देव` वा `फर्स्ट प्रिंस` बने। तो फॉलो फादर।

2. **योगाभ्यास – शिव भगवानुवाच....**

अ. `मैं शुभसंकल्पधारी पवित्र आत्मा हूँ` - सदा इस स्वमान में स्थित हो जाओ तो प्योरिटी की पर्सनैलिटी और अथॉर्टी का अनुभव होगा।

ब. आपका फर्स्ट वायदा है -`और संग तोड़ एक संग जोड़ेंगे, तुम्ही से खाऊँ, तुम्ही से बैठूँ....,मेरा तो एक दूसरा ना कोई।` तो इस वायदे पर पूरा अटेन्शन रखना अर्थात् प्योरिटी की पर्सनैलिटी को धारण करना।

स. वरदाता बाप को कम्बाइंड रुप में अनुभव करो तो अपवित्रता स्वप्न में भी नहीं आ सकती।

द. तुम्हारा स्व-स्वरुप ही पवित्र है, स्वधर्म पवित्र है, स्व-देश पवित्र देश है, स्वराज्य पवित्र राज्य है।

3. **धारणा – सम्पूर्ण पवित्रता**

- पवित्रता ब्राह्मण जीवन की महानता है।
- पवित्रता ब्राह्मण जीवन का श्रेष्ठ श्रृंगार है।
- 21 जन्मों के प्रालब्ध का आधार पवित्रता है।
- आत्मा और परमात्मा के मिलन का आधार पवित्रता है।
- संगमयुग की सर्व प्राप्तियों का आधार पवित्रता है।

4. **चिंतन** –

- सम्पूर्ण पवित्रता से बाबा का क्या अभिप्राय है ?
- सम्पूर्ण पवित्रता के मार्ग में बाधक तत्व/ बातें ?
- सम्पूर्ण पवित्रता के लिये पुरुषार्थ ?
- सम्पूर्ण पवित्रता के लिये बाबा के महावाक्य ?

5. **स्वराज्याधिकारियों प्रति** – प्रिय स्वराज्याधिकारियों! ब्रह्माकुमार-कुमारी का अर्थ ही है सदा प्योरिटी की पर्सनैलिटी और रॉयल्टी वाले। यही पर्सनैलिटी विश्व को अपनी ओर आकर्षित करेगी। और यही प्योरिटी की रॉयल्टी धर्मराजपुरी में रायलटी देने से छुड़ायेगी। इसी रॉयल्टी से भविष्य रॉयल फैमिली में आयेंगे। इसलिये पवित्रता की धारणा में स्वयं, स्वयं के प्रति कड़ी दृष्टि रखें, स्वयं को चलायें नहीं, अलबेले नहीं बनें क्योंकि धर्मराज इस बात में किसी को छोड़ेंगे नहीं, पूरा हिसाब लेंगे।